

दर्द की अमानत

सजीव कश्यप

विकास प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स

मामा भाजा की दरगाह
पटानो का मोहल्ला, फड बाजार
बीकानेर (राजस्थान)

नीरज सक्सना
विकास प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स
मामा भाजा की दरगाह
फड बाजार, बीकानेर मूल्य ५०००
द्वारा प्रकाशित
प्रथम संस्करण १९८६
विकास प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स
फड बाजार बीकानेर द्वारा मुद्रित

DARD KI AMANAT (Poetry)
by Sanjiv Kashyap
Publisher Vikas Printers & Publishers
Mama-Bhanja Ki Dargah
Pathanon Ka Mohalla
Phad Bazar Bikaner (Rajasthan) India
First Edition 1986
Price Rs 50 00 Printed by Vikas Printers & Publisher
Phad Bazar Bikaner

पन छिन जो मुझे प्रेरणा प्रदान
करते हैं, उन पिताश्री के करवमलो
मे प्रस्तुत है यह प्रथम कृति दर्द की अमानत' ।

— सजीव कश्यप

वक्तव्य

‘दद की क्षमालत’ मेरा प्रथम प्रयास है। मेरी कविताओं में मेरा अनुभव अभिव्यक्त हुआ है। यह ध्यान जरूर रखा गया है कि मेरी अभिव्यक्ति सामान्य पाठकों के लिये भी सुवाध हो। यही कारण है कि इन कविताओं में किसी भी प्रकार की जटिलता अथवा दुर्वोधता नहीं है।

सभी कविताएँ छन्द मुक्त हैं। अनावश्यक प्रतीकों की भरमार नहीं है। सम्प्रेषणीयता का ध्यान में रखा हुआ ऐसा किया गया है।

पता नहीं मेरी ये कविताएँ पाठकों का कैसे रंगेंगी और समालोचक इनके लिये क्या सोचेंगे? फिर भी यह सप्रति सहृदय पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करते हुए मुझ प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। मुझ को बस इतना ही कहना है अथ सब बात में पाठकों और समालोचकों के लिये छाड़ देता हूँ।

बीकानर

—सर्लाय कश्यप

अनुक्रमणिका

प्रकृति की पुकार	६
साथी	१०
सपना	११
पहली नजर	१२
मैं और तुम	१३
तुम्हारे लिए	१४
अनजान	१५
वही	१६
भूल	१७
विश्वास	१८
प्यार का पैमाना	१९
भावुक	२०
पछी	२१
इंसान	२४
मेरी भोपड़ी	२५
कत	२८
नहीं जानता	२९
तुम्हारी देन	३०
समालोचक	३१
अनुभव	३२
डर	३३
नया पुराना फूल	३४
बारत	३६
समाज	३७
राजधानी का आदमी	३८
घोखा	४१
छटना	४२
माग-दशक	४३
अन्तिम पड़ाव	४५
मेरी नाव	४६
बाटिका	४७

- ४८ बसाबी
 ५० इच्छा
 ५१ जिन्दगी
 ५२ मुस्कुरा रहे हो देवदूत ?
 ५३ यात्रा
 ५४ स्मरण
 ५५ इमशान
 ५६ : नय
 ५७ स्वच्छता दाताकरण
 ५८ कल्पना
 ५९ : सच और भूठ
 ६० चाहत
 ६१ मुस्कुरान का राज
 ६२ सतीष
 ६३ प्यार
 ६४ अनात
 ६५ ससार का रहस्य
 ६६ शरीर का बंधन
 ६७ पहचान
 ६८ भटकन
 ६९ इतिहास
 ७० इंसान का दर्ज़
 ७१ सवेदनाहीन
 ७२ निरर्थक राह
 ७३ नफरत का जहर
 ७४ आसू और मुस्कान
 ७५ कुछ ही पटा का फेर
 ७६ शिक्षा की मायकता
 ७७ अत्म विश्वास
 ७८ खील
 ७९ कितना लठ ?
 ८० हनाश

ॐ श्री अक्षय

साथी

आत्मा तुप्त थी मेरी
न कोइ चाहत थी
न ही किसी की जरूरत थी
आज तक कभी अकेला न था
सभी अपन ही ता थ ।
मगर जब स तुम्हे पाहा है
सभी को छा दिया मैं
अकना हो गया मैं
एसे एकांतवास में
समझने लगा हू सभी अपना
कागज व कलम का ।
वशोकि तम तक पहुचन का
यही रास्ता श्रेष्ठ है ।

सपना

मेरा एक सपना है
मेरी एक आशा है
जिसके सहाय जिन्दा हूँ मैं ।
फिर फिर सपने में तुम्हें देखा
तुम्हारी आत्मा की ऊर्मा का
अहसास हुआ मुझ ।
यूँ लगा कि तुम मर बहुत करीब हो
लेकिन जल्द ही यह क्षण बीत गया
जा दिल का सुखद लगा
घोंक कर जाग उठा मैं
और फिर सारी जिन्दगी साधता रहा
था ता वह सुखद क्षण ही
जा गुजरने के बाद भी गुजरा नहीं
अब मर पास शरीर नहीं
सिर्फ आत्मा है
और वह भी यही साध रही है ।

पहली नजर

कौन कहता है
नजर भर दख लेने स
प्यार नहीं होता ?
ऐसा सोचना स-दह पोंदा करता है ।
सच ता यह है कि
प्यार की शुरुआत ता
नजर भर दखने से ही हाती है ।
और यही पहली नजर सच है
बाकी सच झूठ हैं, फटय है ।

मैं और तुम

तुम्हारे हर दाट बुलाने पर
दौड़ा आया हूँ मैं तुम्हारे पास
इसी आशा के साथ
कि आज तुम वह कहोगी
जो मैंने चाहा है
मगर तुमने सच ही कहा
जो तुमने चाहा है ।

तुम्हारे लिए

तुम्हारी घात के कारण
आसान है जिंदा रहना ।
अब मैं
अपना लिए नहीं साधना
तुम्हारे लिए साधता हूँ ।
स्वयं की नहीं
तुम्हारी खुशी चाहता हूँ ।
मरी भावनाओं का घरा
सिफ तुम्हारे इंद गिर
घूमना रहता हूँ ।
इसलिए नहीं कि
तु ह परमान करूँ ।
चरन् इसलिय
कि काल-प्रक स भी
तुम्हारी रक्षा कर सकूँ ।

अनजान

मैं समझता था
तुम्हारा और मर बीच कोई नहीं ।
कोई नहीं जानता
कि मैं तुम्हें ।
लेकिन यह मेरा श्रम था ।
अब लगता है
सभी ता जात है
इसीलिये ता राज मर सामन
जिस करत है तुम्हारा ।
यह जानने के लिये कि
तुम्हें इतना नजदीक से जानकर भी
मैं कितना अनजान बनता हूँ ।

भूल

गलती स कही मुझे तुम
दुखी मत समझ लेना
मैं उनस खूब नसीब हू
जो साप्ताहिक बंधन में बंध हूँ।
साप्ताहिक बंधन अच्छा जरूर है
पर इस सुखद समझ लेना
सबसे बड़ी भूल है।
हम भी देखेंगे कि
कितना सुख तुम पाओगी
हस ला आज तुम मत नसीब पर
कल तुम अपने नसीब पर पछताओगी।
तुम्हारा पछतावा मैं नहीं देखना चाहता
मगर सदाशिवितमान क-याय क
तुम भला कैसे ठुकराओगी ?

विश्वास

लगभग सभी प्यार करते हैं
और डूबते भी हैं
अपन तराक स
इसक पागलपन में ।
भटक होग न जान कितन ही
कितनो न गम छाकर
अपन अस्तित्व का भी मिटा दिया ।
पमियों क लिय यह सब कुछ
मुश्किल नही वरन् आसान हैं ।
मुश्किल हैं उस विश्वास का
सदैव बनाय रखना
जा विश्वास तुमन कभी किया था ?
और उसस भी मुश्किल हैं
तुम्हार लिय ही
उस विश्वास पर जीना
जिस विश्वास पर जीने की आज्ञा
सदैव तुम अपन साथी स करते हा ।

प्यार का पैमाना

तुम्हें याद भी न होगा
मैंने कभी तुम्हारी प्रशंसा नहीं की ।
आज बताता हूँ तुम्हें
प्रशंसा क माध्यम
मैं अपन प्यार का
तला नहीं सकता ।
मेरे प्यार का मापन का पैमाना
मैं तुम्हारा ही मन का माना हूँ ।
जरूरत क समय
अपने मन में ही
पुकार कर दख लेना मुझ ।
फिर दखना मैं तुम्हारी
हर जरूरत का
पूरा करने में
समर्थ हूँ या नहीं ।
और उसी आधार पर
करना तुम मूल्यांकन मटा

भायुक

अजीब

भायुक इंसान टू मै ।

कितना आकुल हू

कितना अधिक व्याकुल हू ।

कितना अधिक

इ तजार हैं मुझ

वयो में उस

इतना अधिक याद बरता हू ।

यह जानत हुए भी

कि अब उसक

लौट आन का

पहन ही नहीं उठता ।

पछी

अब भी
क्यूतर आते है
खुद ही ठहर जात है
मरी छत पर ।
आकाश क पक्षी को
पालने का श्रोक
नहीं मुझे ।
उडत हुए क्यूतरों पर
नखर भी नहीं
डालता हूँ मैं ।
फिर भी
क्यूतर आत है ।
खुद ही ठहर जात है
मरी छत पर ।
एक न आकर
बहुत की गुटरगू ।
उस प छी पर
मुझ बहुत प्यार आया ।
मैंन उसे दान दिय
फिर वह राज
आन लगा
मरी छत पर ।
हम दानों मे
हा गर्या अब
दास्ती पवकी ।

धीरे धीरे
 उसका भय हों गया
 पूर्णतया समाप्त ।
 अब उसने मुझसे
 छेड़छाड़ प्रारम्भ की ।
 मैंने खुद से
 उस
 कहीं अधिक
 कामल य पवित्र जान
 छेड़छाड़ नहीं की ।
 साधता था
 कहीं इस
 घाट न लग जाय ।
 देवारा कामल है
 सह १ सस्रगा
 श्रायद ।
 चानक
 एक दिन
 उड़ गया वह पभी
 और लौट कर
 फिर कभी न आया
 मरी छत पर ।
 अब भी
 वाद आती है
 मग्न उसकी ।
 अब भी
 क्वचुत्त आत है
 खुद ही ठहरे जात है
 मरी छत पर ।

मैं भला
 उ-हे पाल कटे
 क्या करू ?
 क्यूटर क पास
 मुझस अलग पाख है ।
 उडना
 उसका स्वभाव है ।
 मैं उडना जानता नहीं ।
 स्वतन्त्र
 प्राणी का बाधना
 मुझ भी अच्छा
 लगता नहीं ।
 बस
 इसीलिय मैं क्यूटर
 पालता नहीं ।
 स्वभाव स
 क्यूटर कभी पलता नहीं ।
 अब भी
 क्यूटर आते हैं
 खुद ही ठहर जात है
 मरी छत पर ।

इन्सान

जैसे तुम हा
वैसा ही ससार है तुम्हारा ।
चाहगे दखना
हैवानों का तो
हैवान मिल जायेग ।
चाहाग दखना
दवताओं का तो
दवता भी मिल जायेग यहां ।
चाहागे देखना
इंसानों का ता
इंसान नहीं मिल गे यहां ।
क्योंकि ससार मे रह कर
हैवान या दवता बना जा सकता है ।
चाह कर भी
इंसान बनना मुश्किल है ।
मैने ता इंसान बनने का
प्रयास करके दख लिया ।
तुम भी
प्रयास कर क दख लो ।

मेरी झोपड़ी

जहाँ मैं रहता हूँ
कौंसा सुन्दर स्थान है ?
कौंसा सौम्य हृदय है ?
घाटों तरफ पहाड़िया
पहाड़ियों के बीच
मेरी झोपड़ी ।
झोपड़ी के किनारे
पास ही
विशाल बरना
बह रहा है ।
दूर-दूर तक दखन पर भी
काँट दिखाइ नहीं दे रहा है ।
सिर्फ बरन का ही
स्वप्न सुनायी दे रहा है ।
सभी तरफ
बर्फ जमी है
बहुत शांति है
मैं अकला हूँ
इतजार में हूँ
कभी तो बर्फ हटगी ही
कभी तो याती आयगी ही
दखने इस सुन्दर स्थली का ।
मैं इतजार करता रहा
न कोइ अधिक आया
न हटी कभी बर्फ ही ।

बस मेरी उस
 ड तजारी हालत पर
 डरघर का
 बहुत तरस आया ।
 सुनी मैं ने फिर
 देववाणी उसकी
 वाला वह खुद मुझस
 तू उस सुन्दर स्थान पर
 रह रहा है
 जहा वष भर
 बफ जमी रहती है ।
 न कोई पथिक यहा आता है
 न ही कलियुग
 क पाणिया में
 क्षमता है यहा आने की ।
 फिर भी यदि तू
 परलाक स हट
 ब्रह्मलोक का जाना चाहता है
 तो बफ को हटा
 बनाले अपना रास्ता खुद ।
 मरा उस सुन्दर रघनी पर
 न जान बया
 अब मन न लगा ।
 उठ खड़ा हुआ
 बहुत परिश्रम किया
 हटा दी बफ
 बना लिया रास्ता मैंने
 और आ गया इस सतार मे

जहाँ राग है
घृणा है
द्वेष है
स्वाध है
तुम भी हा
ऑट अब में भी हूँ ।

कल

जा मे आज हू
यह कल का नहीं बताता ।
चाहे 'कल
भूत का हो
या भविष्य का ।

नहीं जानता

मैं अगर कसों का
नहीं चाहता
ता इसलिए
कि वा जीन की
कला नहीं जानता ।
अगर काइ
मुझ नहीं चाहता
तो इसलिए कि
मैं जीन की कला
नहीं जानता ।

तुम्हारी देन

मर हृदय मे
अब बहुत दया है
अब बहुत शांति है ।
कभी मैं भी कठोर था
तुम्हारी कठोरता का परिणाम स्वरूप
मुझ मिली है
शांति और दया ।

समालोचक

सबप्रथम कविता
जो मैं बनायी थी
वह
एक समालोचक का
दिखाइ थी ।
वह मरी
पहली व अन्तिम
कविता थी ।
जा किसी समालोचक
का दिखाइ थी ।
आज तक
बड़ा दुख है मुझ
उस कविता क
बिगड जाने का ।

अनुभव

पहलो घाट जब दखा
समुद्र
अघाफ् रह गया ।
कितना पानी
पानी ही पानी हैं
फिर भी कितना श्रांत हैं ?
थोड़ी थोड़ी
किंगार घर हल चल हैं
ठीक हम इंसानों की तरह
जो श्रांत कभी नहीं होत
सिफ दिखाने दत हैं श्रांत ।
उसकी हलचल का भी
आखो की घमक य नमी
क माध्यम स
पहियाना जा सकता हैं ।

डर

हमशा डर रहता है
हम डरसाना का
खा जाने का
उन चीजा के
जिनका खाना
अनियाय है ।
फिर भी दु ख
हाता है हम
उन चीखा क
खा जान क बाद ।

नया पुराना फूल

एक फूल खिला
आसपास उसक
बहुत सी थी कलिया ।
इतवार था फूल को
काइ कली अगट फूल बने
ता बात करूँ मैं उसस ।
आखिर फूल की
इतजारी घडिया
समाप्त हुइ
बन गइ हर कली
इक फूल ।
नया हर फूल मुस्करा
रहा था ।
पुराना फूल अब
मुरझा रहा था ।
एक दिन उस राह पर
कुछ बच्च आय
जहा खिल थ फूल ।
हर मुस्करात फूल को
चुन लिया उ हौन
अपन लिय ।
मुरझाय हुए फूल का
अब भी इ तजार था
काइ आकर
घुनेगा उस ।

इतजार-इतजार में ही
बीत गयी
जि दगी उसकी ।
हर-भर पौध न भी
अपन ही अ ग
उस फूल का
अलग कर दिया अपन स ।

बारात

रात का समय था
एक बारात थी ।
हम सब थे
बाराती उस बारात क ।
सभी खुश थे
सफर लम्बा था उस बारात का
बैण्ड बज रहे थे
लाग नाच रहे थे
खूब प्रकाश था
आसपास उस बारात के
खूब धूम धडाक थी ।
चलते चलते मैं थाड़ा पीछे रह गया
उस बारात से ।
दखा भधकार ही अधकार है
जिसे रात से जा रही
बारात है
है उस रास्त पर
एक कब्रगाह
कितनी शान्ति है यहाँ
मैं कितना पीछे रह गया
उस बारात से ?

समाज

ये समाज
गिद्धा व चीला स भी
बदतर हैं ।
व बचारे तों
लाश का खात है
अपना पट भरन का ।
समाज ता
नोध डालता है
अच्छ-भल जि दा ड साना का ।
बना दता हैं उहें
लाश स भी बदतर
और
फिर हसता हैं
उनकी बदनसीबी पर ।

राजधानी का आदमी

राजधानी
कितना बड़ा शहर है ?
कितना लाग है यहाँ ?
कालाहल ही कोलाहल है
दौड़ रहा है
ठले ट्रक, टैक्सि टम्पू
फाट, रिक्शा, बस व डबल डबल
बालक, महिलाय बूढ़
सभी दौड़ रहे हैं ।
बड़ा मुश्किल है
स्त्री व पुरुष में
भेद करना यहाँ ।
बड़े विचित्र लोग हैं
दौड़ती बसा में
डार डारो की तरह कौद है ।
बेदरा की तरह
लटक भी है
बसा में ।
तरह तरह की आवाज
तरह तरह की बालिया
लगता है
इस बिड़िया घर में
काइ प्रलय आन वाली हैं ।
आह !
गाव छोड़
कहा आ गया मैं ?
कहा जाना है मुझ ?

भूल गया
 हाँ याद आया मुझ
 मैं लाल किला देखन आया था
 अब लौट कर
 जाना है
 अपने ननिहाल का
 लाली राड
 बस का नम्बर ?
 अर फिर भूल गया
 किसस पूछ ?
 मन हसा इस प्रश्न पर
 हजातों लाग है
 किसी स भी पूछ लू
 सभी वा इतना कर रह है
 अपनी अपनी बसा की
 डरत डरते
 पूछा एक प्रभु से
 लाली राड
 जान याली बस का
 क्या है नम्बर भाइ ?
 इतना पूछत ही
 झल्ला गया वह प्रभु
 याच' मुझस
 अजीब आदमी हो
 क्या भला मुझस पूछत रा ?
 इन्कवायरी स क्या नहीं पूछत हा ?
 अवाकू रह गया मैं
 देखता रहा उस प्रभु का
 सोचता रहा यू

बस का नम्वर पूछकर
चया कर बैठे काइ अपराध ?
इस भीड़ में न जान
कहा खा गयी है सचदना
लाल किल की तरफ दखा मुडकर
वह भी इस पडा था मुझ पर ।

धोखा

हम इश्वर न
रग-रूप दिया है
इसलिय
कि इस सप्ताह में
हमारी एक पहचान बन सके ।
बड़ी आसानी से
इ सान न
घाखा दिया
इश्वर को और अपन आप का ।
हम या कदापि नहीं हात
जैसे लोगों क सम्मुख
पहचान जाते हैं ।

छल्ला

बड़ा साम्य है
कायल व मनुष्य
क स्वभाव में ।
कोयल हर बार
अपन अंड
छुद चाहगी सना
पर एसा करगी नहीं ।
मनुष्य भी अपनी
हर गलती क बाद
पछतायगा
सुघारगा चाहगा
अपन आप का
मगर पुधरगा नहीं ।
जीवन क अंतिम क्षण तक
अपन आप का ही
छलत है दातों ।

मार्ग-दर्शक

हर राज
प्रयास करता था मैं भी
चलने का
रास्ता भूल जाता था मगर ।
फिट आग्रा हाती यू
रास्त का राही कोड
रास्ता दिखायगा मुझ ।
रास्ता भी बताते थे राही
फूलों का नहीं
काटों का ।
कांटों पर चलना भला
कैसे अच्छा लगता मुझे ?
मैं फिट लौट आता पीछे
अब मैं भी नहीं चलता
भटक हुए राहियों का,
यह रास्ता बताता हू
जिस पर मैं चल न सका था ।
लागू प्रायद यही समझते हैं
मैं चलकर आया था
उस रास्त पर ।
पूछते हैं मुझ से
उस रास्त की कठिनाइयाँ ।
अच्छी तरह समझा देता हूँ मैं उन्हें
अब एक भय हा गया मुझ
कौन, किस, कब कहां, कैसे

रास्ता दिखायगा सही ?
तरस आता है
रास्ता पूछने वालों पर
गुस्सा आता है खुद पर ।

अन्तिम पड़ाव

आज , - ।
इस त्रहट में
अंतिम दिन है मरा । ,
फिर भी *
जाने से पहले
वह सब व तक जाऊंगा
जा कुछ सोचकर आया था
इस त्रहट में ।

मेरी नाव

पहाड की तलहटी में बहती नदी
उस नदी में
मेरी नाव
नदी के प्रवाह
के साथ
बह रही है ।
कहा आ गया मैं ?
फिर भी
समुद्र तक तो
पहुँच ही जाऊँगा ।

वाटिका

अपनी वाटिका को
मरुस्थल बना से
बचालो तुम ।
मुरझा जाये यदि काँडे पौधा
उखाड कर फेंक दो उस ।
दूसरा पौधा
लगा लो तुम ।
हरी भरी वाटिका
म
सबसे वातावरण
बना लो तुम ।
ताकि तुम्हारी वाटिका
एक मिसाल बन जाये
उन लागों के लिये,
जिन की वाटिकाएँ
मरुस्थल बनी हैं ।
शायद तुम्हारी
वाटिका का देख
व फिर से सजा ल
अपनी मरुस्थली को ।

बैसाखी

एक ड्र सान
लगडा रहा था ।
बैसाखिया क सहाटे
घलने का प्रयास
कर रहा था ।
लाग उस घक्का
द दत
गिरा दत उस
लेकिन
मैन सम्भाल लिया उस
भगा दिया गिरान वाला को ।
उस लगडे का
खूब छयाल रखा ।
बैसाखिया उसकी
थाम ली मैन
फिट चलना सिखाया उस
जल्दी ही चलना सीख गया वह ।
फिट उसने
थमा दी बैसाखिया अपनी मुझे
उ ही क सहाटे चलना सिखा दिया
ऑट जात जाते
घक्का भी दे गया मुझे ।
अय घक्का देने को
लागा की आदत पड गयी ।
व ही मुझे

गिराने का प्रयास करते हैं
जिनसे मैं
खूब प्यार करता हूँ ।
किसे पुकारूँ ?
यह नहीं है यहाँ
जिस मरने अब सहायता करनी थी ।

13

इच्छा

नदी का किनारा
समीप एक मन्दिर
करतल ध्वनि का स्वर
सभी की इच्छा
सभी की पुकार
काड़ सुन न सुन
चाहत है सभी की
वह सिफ हमारी सुन ।
मेरे जैसा काड़
अडकर बैठ गया वहा
उसी क समीप
चाहता है वह मान द्याये
मरी इच्छा
गलत हा या सही
वह मान नहीं रहा
कहता है सिफ सही इच्छा बताओ ।
बाला
सभी की इच्छाए
मर ही जैसी है पशु
सभी की इच्छा
सभी की पुकार
काड़ सुन न सुने
स रह ही सन्दह ।

जिन्दगी

तेरे समीप आने

व

तुझ से दूर जाने

के शान्त का नाम

ही जिन्दगी है ।

मुस्कुरा रहे हो देवदूत ?

आज आय हा देवदूत ?
कब स इत जात थी तुम्हारी
दूर खड क्यों मुस्कुरा रहे हा ?
पास आकर बैठ क्यों नहीं जात ?
हैं तो यहा बहुत इ तजार किया है
मैं तुम्हारा
थाडा इ तजार तुम करा अब मरा
काफी पियोग या चाय ?
कुछ बनाता हू तुम्हार लिय मैं
पहले राज आत थ मैं पास
अब बहुत कम आत हा
बाल नहीं रह हा तुम ?
मुस्कुरा ही मुस्कुरा रह हा ?

याद

थक गया हूँ जिन्दगी से
डूबा जा रहा हूँ
जिन्दगी के विगड़ते हालातों से
जरा पास आकर देख
मरी हर चीज घाटी हा गयी
सिर्फ यादें मरी हैं
लेकिन बदल चुकी हैं
उन यादों का भी
दिना दना चाहत है ।

स्मरण

अन्त का स्मरण रह

ता

फल भर क समान

लगती है जिन्दगी

यदि अन्त का स्मरण

न रहे ता

फल भर में

बीत जाती है जिन्दगी ।

श्मशान

भयभीत
हाने पर
मैं कहीं ओट नहीं
श्मशान में
जा बैठता हूँ ।
शकुन मिल
जाता है यहाँ
यह देख
मुझे जिंदा
इन्सानों से
कितन बहतर है ?

भय

सुनसान
राहों स
गुजरत यवत
मुझ कभी
भय नहीं लगता ।
भय लगता है मुझ
महानगरो स
वहा क श्राट स
उस
धीस्र पुकार स
जा सिफ
गूगे बहरा य अघा
क समुदाय
क सम्मुख
गूज कर
श्राट मे कही
खा जाती हैं ।

स्वच्छन्द वातावरण

सभी तरफ
विद्वुष्ट रह हैं पंछी
गुनगुना रह हैं गीत
अपनी भाषाआ क ।
खिल रहे हैं
हर दिन नय फूल ।
कितनी नवीनता है
वातावरण मे ।
सभी को
अपन आप पर
भरोसा व विश्वास
है कितना ?
स्वच्छन्द वातावरण
बनान क हम
शौकीन
अवश्य है
पर उस वातावरण
मे जीने क
नहीं ।

कल्पना

घलो आज
हम खुन्न हो ल
किसी ऐसी
श्रुती कल्पना के
सहार
जा कल्पना
सत्य क समान
लगने का
थोडा थाडा
सदह पैदा करती हैं ।

सच और झूठ

सपट के पास
साप भी हैं
साप का जहर भी ।
साप इसलिय कि
झूठ बाल कर
उस दूध पिलान के नाम
जनता को ठगा जाये ।
जहर इसलिय
कि
सच बालकर उसे
बधा जाय ।
अटवल दर्जे का
रवार्थी इंसान ।
सच और झूठ
दाना के प्रयाग में
माहिर हाता हैं ।
दोनो म स
किसी एक के
प्रयाग में नहीं ।

चाहत

कहीं न कहीं
किसी ७ किसी क पास
यह सब कुछ है मरा
जिसे टूट रहा हूँ मैं ।
कितने वष
न जाने कितनी
सदियां
बीत गयीं
उस पुरानी चाहत में ।
अब तो मिल जाय वह
जिस में अपना समझा है ।
फिर मैं सास लूंगा ठण्डी
एक पल क लिय
सिर्फ एक पल क लिय ।

मुस्कुराने का राज

पुनर्कित हो
रहा है घ-डमा
सूय का प्रकाश
वा
और उसे परावर्तित कर
पृथ्वी पर
अपन समीप कुछ न रखना
ही उसक
मुस्कुराने का राज है।

सठतोष

कुछ लाग स ताप
रसलिय रखत है कि
स ताप
रख लने पर
सब कुछ मिलने
की आशा हा
जाती है ।
यस इसी आशा क
यज्ञीभूत हा
हम अपना
स ताप खा
बैठत है ।

प्याह

प्यार
एक महम न हँ
जो कभी-कभी आता है
लौटकर हर धार
घला जाता है
लाख कागिन्न करन
पर भी
जिस तरह
महम न हमेशा क लिये
रुकता नहीं
ठीक उसी तरह
प्यार भी रुकता नहीं ।

अज्ञात

तुम अज्ञात य
अज्ञात मे
मिल गय
अज्ञात रहन की
तुम्हारी कामना
पूर्ण हुई ।
सिर्फ मर लिय
तुम एक
अज्ञात वास
छाड़ गय
जिसमे तुम्हारे
ज्ञात न अज्ञात
हान का
इतिहास
छिपा है ।

संसार का रहस्य

आज तुझे यतना पडेगा
मुझे इस संसार का रहस्य
फिर मैं इस संसार
के घाटे में नहीं
तु हारे घाटे में सारूंगा ।
सोचकर संसार के घाटे में
गलत दिशा दी है मैंने
अपने आप का ।
तू आज यता दू मुझे
इस संसार का रहस्य ।

शरीर का बन्धन

आत्मा उदास है
उसके पास पख है
उड़ना चाहती है
मिलना चाहती है
भयन प्रियजन से
मगर शरीर बाधक है
शरीर रूपा जल में
कैद है आत्मा
कैसे मिल प्रियतम से
दूर है मन्दिर उसका ।

पहचान

घाद पट पहुँचा इसा, आकाश में झाक आया
सागर की असीम गहराइयों को नाप आया
सदियों से मगट जा हम सफट हैं उसका
उसी हमदम एगे न आज तक पहचान पाया ।

भटकल

सता-सता कर
शांति दता है तू ।
दुःख पर दुःख द
थाडा सुख दता है तू ।
बहुत भटकाव क याद
भटकती आरमाओं का
पास बुला लता है तू ।
अपन आपका
जान जाय इ सान
इसलिय
इतनी भटकन
पैदा करता है तू ।

इतिहास

गुजरना

एक इतिहास है

चाहे राह से गुजरो

या दुनिया से गुजरो ।

इब्साण का वजूद

वसी है घस्तिया एसी जहा दौलत निहाल है
साजो-सामा एशो इन्नरत यमिन्नाल है
साधन सवारी, जि सों की काइ कमी नहीं
वस इ सान का वजूद ही एक याकी सयाल है ।

सवेदना हीन

कक्रोट क जगनो का फौलाय यया ख्व घटा हे
नगरो नागतिको पर पोसे को रग रूप घटा हे
इस अभिज टय भीड मे छो गई हे सवदना
जिसे दूढता इन्साग देवम यन के छडा हे ।

निरर्थक राह

निरर्थक राहें हैं मरी ।
हर क्षण रौंदा हू
बहुत तज दौंडा हू ।
मरी दौंड का दख
अन्दाजा लगाया हैं लागों ने
बहुत कुछ पा लिया मेन
उनका अँदाज
कितना गलत हैं ?
क्या किसी क पास
जान की
चाह रखनी चाहिय
किसी निरर्थक राह पर ?

नफरत का जहर

अब क घली है, एसी लहर मेरे शरमे में
बद भी दरिदे यन उठ है जिसके कहर में
दुआए मांगते इबादत में एक साथ थे जो हाथ
या रव अब य ही डूबे है नफरत क जहर में ।

आसू और मुस्कान

दुनिया में
आसू भी है,
और मुस्कान भी है ।
मुस्कान इसलिए कि
बहुत कुछ करने का
मिला है
यह इंसानी जीवन ।
आसू इसलिए कि
बिना कुछ
किये बगैरे
गवा दिया हमने
यह इंसानी जीवन ।

कुछ ही घंटों का फेर

इस रात भी
सुनसान है सड़कें ।
मैं फिर चल दिया
सुनसान सड़कों पर भटकने ।
यूँ लग रहा है मानों
प्राणियों का अस्तित्व
समाप्त हो गया ।
संनाटा छाया है वातावरण में
कुछ ही घंटों का फेर
कितना कुछ बदल जाता है ?

शिक्षा की सार्थकता

शिक्षा साथक बन तुम्हारी ऊच पद का प्राप्त करा
चल मानवता के आदर्शों पर राष्ट्र का दु छ दे य हरा
हो उदात्त विचार तुम्हारे श्रम निष्ठा का अपनाओ
समता, एक्य प्रेम भाव से सबक प्रिय तुम बन जाओ ।

आत्म विश्वास

कदम बढ़ें उस आर तुम्हारे जहाँ न श्रोक सताप हो
श्रम और श्यायलम्बन द्वारा मान्यता का विकास हो
नव वय में सकल्प हमारा स्हय निष्ठा अपनायगे
राष्ट्र का उदयन करग, जीवन सफल बनायेंगे ।

चीख

एक चीख
दौड़ते लोग
समीप आता मैं
घींघने याल को
मरा सहारा
उसक पक्ष में
मरा घींघना
समाज क खुदाओं का
मुझ नकार दना
साथ ही सताना मुझ
इसलिय कि
घींघन वाले क
समीप बयो गया मैं
यही मरा अपराध
उपक्षा भरी दृष्टियां
मरी सजा
सुनो जरा
यदि सुन सका ता
एक चीख
मरी अपनी भी ।

कितना झूठ ?

पुरुषों
को विवाह की सचाह
इसलिय
दी जाती है कि
अकल जिन्दगी जीते-जीते
धक जाआग ।
स्त्रियों का इसलिये
कि तुम्हारा
जीवन पूरा हाग।
तुम्ह सहरा मिलगा ।
कितना झूठ बोलकर
लाग
दा पयित आत्माओं का
विवाह व धन में
बाध दते हैं ?

हताश

हताश
होना उतना
बुरा नहीं है
जितना बुरा
जिन्दगी स
हताश
दिखाइ दना है ।
मूख
हा तूम
यदि हताश हा
जि दगी स ।
महामूख हो तुम
यदि हताश
दिखाइ दत हो ।

